४. साहित्य की निष्कपट विधा है-डायरी

- कुबेर कुमावत

मौखिक 'दैनंदिनी लिखने के लाभ' विषय पर चर्चा में अपने मत व्यक्त कीजिए।

कृति के लिए आवश्यक सोपान :

• दैनंदिनी के बारे में प्रश्न पूछें। • दैनंदिनी में क्या-क्या लिखते हैं; बताने के लिए कहें। • अपनी गलती अथवा असफलता को कैसे लिखा जाता है, इसपर चर्चा कराएँ। • किसी महान विभूति की डायरी पढ़ने के लिए कहें।

डायरी हिंदी गद्‍य साहित्य की सबसे अधिक पुरानी परंतु दिन प्रतिदिन नई होती चलने वाली विधा है। हिंदी की आधुनिक गद्‍य विधाओं में अर्थात उपन्यास, कहानी, निबंध, नाटक,आत्मकथा आदि की तुलना में इसे सबसे अधिक पुरानी माना जा सकता है और इसके प्रमाण भी हैं। यह विधा नई इस अर्थ में है कि इसका संबंध मनुष्य के दैनंदिन जीवनक्रम के साथ घनिष्ठता से जुड़ा हुआ है। इसे अपनी भाषा में हम दैनंदिनी, दैनिकी अथवा रोजनिशी पूरे अधिकार के साथ कहते हैं परंतु इसे आजकल डायरी कहने पर विवश हैं। डायरी का मतलब है जिसमें तारीखवार हिसाब-किताब, लेन-देन के ब्योरे आदि दर्ज किए जाते हैं। डायरी का यह अत्यंत सामान्य और साधारण परिचय है। आम जनता को डायरी के विशिष्ट स्वरूप की दूर-दूर तक जानकारी नहीं है।

हिंदी गद्‍य साहित्य के विकास; उन्नति एवं उत्कर्ष में दैनंदिनी का योगदान अतुल्य है। यह विडंबना ही है कि उसकी अब तक हिंदी में उपेक्षा ही होती आई है। कोई इसे पिछड़ी विधा तो कोई इसे अद्‌र्ध साहित्यिक विधा मानता है। एक विद्‌वान तो यहाँ तक कहते हैं कि डायरी कुलीन विधा नहीं है। साहित्य और उसकी विधाओं के संदर्भ में कुलीन-अकुलीन का भेद करना साहित्यिक गरिमा के अनुकूल नहीं है। सभी विधाएँ अपनी-अपनी जगह पर अत्यधिक प्रमाण में मनुष्य के भावजगत, विचारजगत और अनुभूतिजगत का प्रतिनिधित्व करती हैं। वस्तुतः मनुष्य का जीवन ही एक सुंदर किताब की तरह है और यदि इस जीवन का अंकन मनुष्य जस का तस किताब रूप में करता जाए तो इसे किसी भी मानवीय दृष्टिकोण से श्लाघ्यनीय माना जा सकता है।

डायरी में मनुष्य अपने अंतर्जीवन एवं बाह्‌यजीवन की लगभग सभी स्थितियों को यथास्थिति अंकित करता है। जीवन के अंतर्द्‌वंद्‌व, वर्जनाओं, पीड़ाओं, यातनाओं, दीर्घ अवसाद के क्षणों एवं अनेक विरोधाभासों के बीच संघर्ष में अपने आपको स्वस्थ, मुक्त एवं प्रसन्न रखने की प्रक्रिया है डायरी। इसलिए अपने स्वरूप में डायरी प्रकाशन

परिचय

आधुनिक साहित्यकारों में कुबेर कुमावत एक जाना-माना नाम है। आपके विचारात्मक एवं वर्णनात्मक निबंध बहुत प्रसिद्‌ध हैं। आपके निबंध, कहानियाँ विविध पत्र-पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशित होती रहती हैं।

गद्‍य संबंधी

वैचारिक निबंध : वैचारिक निबंध में विचार या भावों की प्रधानता होती है। प्रत्येक अनुच्छेद एक-दुसरे से जुड़े होते हैं। इसमें विचारों की शृंखला बनी रहती है।

प्रस्तुत पाठ में लेखक ने 'डायरी' विधा के लेखन की प्रक्रिया, महत्व आदि को स्पष्ट किया है।

योजना का भाग नहीं होती और न ही लेखकीय महत्त्वाकांक्षा का रूप होती है । साहित्य की अन्य विधाओं के पीछे उनका प्रकाशन और तत्पश्चात प्रतिष्ठा प्राप्त करने की मंशा होती है । वे एक कृत्रिम आवेश में लिखी जाती हैं और सावधानीपूर्वक लिखी जाती हैं । साहित्य की लगभग सभी विधाओं के सृजनकर्म के पीछे उसे प्रकाशित करने का उद्‌देश्य मूल होता है । डायरी में यह बात नहीं है । हिंदी में आज लगभग एक सौ पचास के आसपास डायरियाँ प्रकाशित हैं और इनमें से अधिकांश डायरीकारों के देहांत के पश्चात प्रकाश में आई हैं । कुछ तो अपने अंकित कालानुक्रम के सौ वर्ष बाद प्रकाशित हुई हैं ।

डायरी के लिए विषयवस्तु का कोई बंधन नहीं है । मनुष्य की अनुभूति एवं अनुभव जगत से संबंधित छोटी से छोटी एवं तुच्छ बात, प्रसंग, विचार या दृश्य आदि उसकी विषयवस्तु बन सकते हैं और यह डायरी में तभी आ सकता है जब डायरीकार का अपने जीवन एवं परिवेश के प्रति दृष्टिकोण उदार एवं तटस्थ हो तथा अपने आपको व्यक्त करने की भावना बेलाग, निष्कपट, एवं सच्ची हो । डायरी साहित्य की सबसे अधिक स्वाभाविक, सरल एवं आत्मप्रकटीकरण की सादगी से युक्त विधा है । यह अभिव्यक्ति की प्रक्रिया से गुजरती धीरे-धीरे और क्रमशः अग्रसारित होने वाली विधा है । डायरी में जो जीवन है वह सावधानीपूर्वक रचा हुआ जीवन नहीं है । डायरी में वह कसाव नहीं होता जो अन्य विधाओं में देखा जा सकता है । डायरी से पारदर्शक व्यक्तित्व की पहचान होती है जिसमें सब कुछ निःसंकोच उभरकर आता है ।

डायरी विधा के रूप संस्थान का मूल आधार उसकी दैनिक कालानुक्रम योजना है । अंग्रेजी में 'क्रोनोलॉजिकल ऑर्डर' कहा जाता है । इसके अभाव में डायरी का कोई रूप नहीं है परंतु यह फर्जी भी हो सकता है । हिंदी में कुछ उपन्यास, कहानियाँ और नाटक इसी फर्जी कालानुरूप में लिखे गए हैं, यहाँ केवल डायरी शैली का उपयोग मात्र हुआ है । दैनंदिन जीवन के अनेक प्रसंग, भाव, भावनाएँ, विचार आदि डायरीकार इसी कालानुक्रम में अंकित करता है, परंतु इसके पीछे डायरीकार की निष्कपट स्वीकारोक्तियों का स्थान सर्वाधिक है । बाजारों में जो कापियाँ मिलती हैं उनमें छिपा हुआ कालानुक्रम है । इसमें हम अपने दैनंदिन जीवन के अनेक व्यावहारिक ब्योरों को दर्ज करते हैं परंतु यह विवेच्य डायरी नहीं है । बाजारों में मिलने वाली डायरियों के मूल में एक कैलेंडर वर्ष छपा हुआ है। यह कैलेंडरनुमा डायरी शुष्क, नीरस एवं व्यावहारिक प्रबंधनवाली डायरी है जिसका मनुष्य के जीवन एवं भावजगत से दूर-दूर तक संबंध नहीं होता।

हिंदी में अनेक डायरियाँ ऐसी हैं जो प्रायः यथावत अवस्था में प्रकाशित हुई हैं । इनमें आप एक बड़ी सीमा तक डायरीकार के व्यक्तित्व को निष्कपट,पारदर्शक रूप में देख सकते हैं । डायरी को बेलाग

श्रवणीय

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी की जीवनी में से कोई प्रेरणादायी घटना पढ़िए और सुनाइए ।

लेखनीय

किसी पठित गद्‌य/पद्‌य के आशय को स्पष्ट करने के लिए पी.पी.टी (P.P.T.) के मुद्‌दे बनाइए ।

आसपास

अंतरजाल से कोई अनूदित कहानी ढूँढ़कर रसास्वादन करते हुए वाचन कीजिए ।

आत्मप्रकाशन की विधा बनाने में महात्मा गांधी का योगदान सर्वोपरि है । उन्होंने अपने अनुयायियों एवं कार्यकर्ताओं को अपने जीवन को नैतिक दिशा देने के साधन रूप में नियमित दैनंदिन लिखने का सुझाव दिया तथा इसे एक व्रत के रूप में निभाने को कहा । उन्होंने अपने कार्यकर्ताओं को आंतरिक अनुशासन एवं आत्मशुद्धि हेतु डायरी लिखने की प्रेरणा दी । गुजराती में लिखी गई बहुत सी डायरियाँ आज हिंदी में अनुवादित हैं । इनमें मनु बहन गांधी, महादेव देसाई, सीताराम सेकसरिया, सुशीला नैयर, जमनालाल बजाज, घनश्याम बिड़ला, श्रीराम शर्मा, हीरालाल जी शास्त्री आदि उल्लेखनीय हैं ।

निष्कपट आत्मस्वीकृतियुक्त प्रविष्टियों की दृष्टि से हिंदी में आज अनेक डायरियाँ प्रकाशित हैं जिनमें अंतरंग जीवन के अनेक दृश्यों एवं स्थितियों की प्रस्तुति है । इनमें डॉ. धीरेंद्र वर्मा, शिवपूजन सहाय, नरदेव शास्त्री वेदतीर्थ, गणेश शंकर विद्‌यार्थी, रामेश्वर टांटिया, रामधारी सिंह 'दिनकर', मोहन राकेश, मलयज, मीना कुमारी, बालकवि बैरागी आदि की डायरियाँ उल्लेखनीय हैं । कुछ निष्कपट प्रविष्टियाँ काफी मार्मिक एवं हृदयस्पर्शी हैं । मीना कुमारी अपनी डायरी में एक जगह लिखती हैं – ''जिंदगी के उतार-चढ़ाव यहाँ तक ले आए कि कहानी लिखूँ । यह कहानी, जो कहानी नहीं है, मेरा अपना आप है । आज जब... उसने मुझे छोड़ दिया तो जी चाह रहा है, सब उगल दूँ ।'' मलयज अपनी डायरी में २९ दिसंबर, ५९ को लिखते हैं-''शायद सब कुछ मैंने भावना के सत्य में ही पाया है । कुछ नहीं होता, मैं ही सब कल्पित कर लिया करता हूँ । संकेत मिलते हैं, पूरा चित्र खड़ा कर लेता हूँ ।'' डॉ. धीरेंद्र वर्मा अपनी डायरी में १९/११/१९२१ के दिन लिखते हैं-''राष्ट्रीय आंदोलन में भाग न लेने के कारण मेरे हृदय में कभी-कभी भारी संग्राम होने लगता है । जब हम पढ़े-लिखे व समझदार लोगों ने ही कायरता दिखाई है तब औरों से क्या आशा की जा सकती है । सच तो यह है कि भले घरों के पढ़े-लिखे लोगों ने बहुत ही कायरता दिखाई हैं ।''

अपने जीवन की सच्ची, निष्काय, पारदर्शी छवि को रखने में डायरी साहित्य का उत्कृष्ट माध्यम है । डायरी जीवन का अंतर्दर्शन है । अंतरंगता के अभाव में डायरी, डायरीकार की निजी भावनाओं, विचारों एवं प्रतिक्रियाओं के द्‌वारा अंकित उसके अपने जीवन एवं परिवेश का दस्तावेज है । एक अच्छी, सच्ची एवं सादगीयुक्त डायरी के लिए डायरीकार का सच्चा, साहसी एवं ईमानदार होना आवश्यक है । डायरी अपनी रचना प्रक्रिया में मनुष्य के जीवन में जहाँ आंतरिक अनुशासन बनाए रखती है, वहीं मनौवैज्ञानिक संतुलन बनाने का भी कार्य करती है ।

मौलिक सृजन

'डायरी लेखन में व्यक्ति का व्यक्तित्व झलकता है' इस विधान की सार्थकता स्पष्ट कीजिए ।

संभाषणीय

पुस्तकालय से राहुल सांस्कृत्यायन की डायरी के कुछ पन्ने पढ़कर उस पर चर्चा कीजिए ।

पाठ से आगे

हिंदी में अनुवादित उल्लेखनीय डायरी लेखकों के नामों की सूची तैयार कीजिए ।

शब्द संसार

निष्कपट (वि.) = छलरहित, सीधा
मनोवैज्ञानिक (भा.सं.) = मन में उठने वाले विचारों का विवचन करने वाला
संतुलन (पुं.सं) = दो पक्षों का बल बराबर रखना
कायरता (भाव.सं.) = भीरुता, डरपोकपन
दैनंदिनी (स्त्री.सं.) = दैनिकी
गरिमा (सं.स्त्री.) = महिमा, महत्व
वर्जना (क्रि.) = रोक लगाना
मंशा (स्त्री.अ.) = इच्छा
बेलाग (वि.) = बिना आधार का
फर्जी (वि.फा.) = नकली
कसाव (पुं.सं.) = कसने की स्थिति
विवेच्य (वि.) = जिसकी विवेचना की जाती है ।
सर्वोपरि (वि.) = सबसे ऊपर

मुहावरा

दूर-दूर तक संबंध न होना = कुछ भी संबंध न होना

पाठ के आँगन में

(१) संजाल पूर्ण कीजिए :-

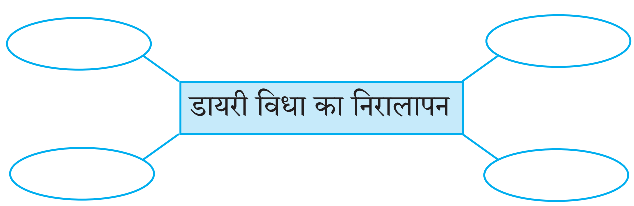

(२) उत्तर लिखिए :-

'क्रोनॉलॉजिकल' ऑर्डर इसे कहा जाता है -

(३) (क) अर्थ लिखिए :-

अवसाद - ____________

दस्तावेज- ____________

(ख) लिंग परिवर्तन कीजिए :-

लेखक - ____________

विद्‌वान - ____________

भाषा बिंदु

निम्न वाक्यों में से कारक पहचानकर तालिका में लिखिए :-

कारक चिह्न

(१) किसी ने आज तक तेरे जीवन की कहानी नहीं लिखी ।
(२) मेरी माता का नाम इति और पिता का नाम आदि है ।
(३) वे सदा स्वाधीनता से विचरते आए हैं ।
(४) अवसर हाथ से निकल जाता है ।
(५) अरे भाई ! मैं जाने के लिए तैयार हूँ ।
(६) अपने समाज में यह सबका प्यारा बनेगा ।
(७) उन्होंने पुस्तक को ध्यान से देखा ।
(८) वक्ता महाशय वक्तृत्व देने को उठ खड़े हुए ।

कारक चिह्न	कारक नाम

रचना बोध

....
....
....